28.4 मार्क्सवाद की विचारधारा का नए ढंग से उपयोग

डॉ.रामविलास शर्मा ने मार्क्सवाद की विचारधारा का भारतीय समाज-संदर्भों को समझते हुए उपयोग किया। इस क्षेत्र में वे लकीर के फकीर नहीं रहे। मार्क्सवाद की लीक को तोड़ने पर बहुत से मार्क्सवादी नाराज़ हुए और उन्हें 'हिंदू पुनरुत्थानवाद' का समर्थक आलोचक तक कहा गया। हिंदी की मार्क्सवादी आलोचना में निर्ममता का दूसरा नाम ही रामविलास शर्मा है। ध्वंसात्मक आलोचना में उनका मुकाबला नहीं। लेकिन रचनाकार की बारीक से बारीक अर्थ-ध्वनि पकड़ने में उनका कोई जवाब नहीं। 'निराला की साहित्य-साधना' हिंदी आलोचना की बेजोड़ उपलब्धि है - शायद ही भारतीय आलोचना में किसी एक कवि पर इतना महत्वपूर्ण कार्य किसी आलोचक ने किया हो और एकदम नए साहित्य-प्रतिमानों के साथ।

दरअसल, डॉ.रामविलास शर्मा का काफी लेखन ऐसा है जिसका मार्क्सवाद और इतिहास से सीधा संबंध है। लेकिन इस लेखन की विशेषता यह है कि वे मार्क्सवाद को ज्यादा आलोचनात्मक निगाह से देखते-परखते हैं। सन 1950 के आसपास कम्युनिस्ट पार्टी के अंदर विचारधारात्मक संघर्ष आरंभ हुआ। प्रगतिशील लेखकों की बहस को बढ़ाने के लिए डॉ. शर्मा ने दो पुस्तकें लिखीं - (1) 'प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ'; और (2) 'मानव-सभ्यता का विकास'। बहस का प्रमुख मुद्दा था - अंग्रेज़ों के भारत आने के समय यहाँ के आर्थिक विकास की स्थिति क्या थी? अंग्रेज़ों ने पुराने व्यापार के ढाँचे को तोड़कर नए व्यापार-केंद्र स्थापित किए। मुनाफाखोरी के ढंग में बदलाव आया। किसान के माल की लूट मच गई। आखिरकार साम्राज्यवादी सत्ता को पछाड़ने के लिए 1857 में गदर हुआ। जो लोग गदर को स्वाधीनता-संग्रम नहीं मानते थे, वे अक्सर मार्क्स का हवाला देते थे। उनका कहना था कि मार्क्स ने लिखा है, भारत ग्राम-समाजों का देश है। इस पुरानी समाज-व्यवस्था को तोड़ने का श्रेय अंग्रेज़ों को है। इस तरह वे भारत में अंग्रेज़ी की प्रगतिशील भूमिका को प्रमाणित करते थे। डॉ.शर्मा ने तर्कों से यह सिद्ध किया कि यह धारणा सही नहीं है। इसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए उन्होंने 'भारत में अंग्रेज़ी राज और मार्क्सवाद' तथा 'मार्क्स और पिछड़े हुए समाज' जैसी पुस्तकें लिखीं। मार्क्स, भारत में अंग्रेज़ों का राज न चाहते थे - वे कहते थे कि भारत में अंग्रेजी राज कायम होने से भारत का स्वाभाविक विकास रुक गया।

भारत और यूरोप के इतिहास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दा रहा है - सामंतवाद। सामंत बड़े-बड़े ज़मींदार और राजा होते हैं, जनता का शोषण करते हैं।'मार्क्स के लिए सामंतवाद उत्पादन की एक पद्धति थी।' मार्क्स सोचते थे कि सर्वहारा क्रांति इंगलैंड, जर्मनी में होगी। लेकिन वैसा हुआ नहीं। क्रांति क्यों नहीं हुई? डॉ.शर्मा का विचार है कि इंगलैंड के चतुर पूँजीपतियों ने मुनाफे का कुछ हिस्सा मज़दूरों को बाँटना शुरू कर दिया। मज़दूरों की क्रांतिकारिता को भ्रष्ट किया। आयरलैंड में सत्ताधारी भूस्वामी-वर्ग था, क्रांति नहीं हो सकती थी। मार्क्स की आरंभिक धारणाओं को लेकर जो सिद्धांत प्रचारित हुआ उसे 'त्रोत्स्कीवाद' नाम से जाना जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार एशिया का विकास यूरोप के विकास से बिल्कुल अलग ढंग से हुआ। मार्क्स ने उत्पादन की 'एशियाई पद्धति' का हवाला दिया और कहा कि आदिम साम्यवादी समाज एशिया में है। उत्पादन की खास एशियाई पद्धति है और एशिया के लोग उससे बाहर नहीं निकलते। भारत में जाति-प्रथा का ज़ोर है। इसलिए यूरोप की तरह के वर्गों का निर्माण भारत में नहीं हुआ। न उस ढंग का सामंतवाद-पूँजीवाद आया। इस बात को स्पष्ट करने के लिए डॉ. शर्मा ने पुस्तक लिखी -' 'मार्क्स त्रोत्स्की और एशियाई समाज'। उन्होंने कहा कि एशियाई उत्पादन पद्धति को गलत ढंग से पेश किया गया। कारण, त्रोत्स्कीवादी प्रचारित साम्राज्यवादियों के संरक्षण में थे और कहते थे कि एशिया की आर्थिक जड़ता को पश्चिमी देशों का संपर्क ही तोड़ सकता है।

डॉ. शर्मा मानते हैं कि 'संस्कृति' का गहरा रिश्ता अर्थ-तंत्र से है। मार्क्स पर यूनानी-रोमन संस्कृति का प्रभाव था। सोलहवीं शताब्दी के इंगलैंड और यूनान में समानता थी - व्यापारिक पूँजीवाद। अंधकार युग

Scanned by CamScanner

के बाद का यूरोप, यूनानी-रोमी संस्कृति से प्रभावित होकर नवजागरण से मार्क्सवाद की ओर पहुँचा। इस मुद्दे पर प्रकाश डालने के लिए डॉ.शर्मा ने किताब लिखी - 'मार्क्स और भारत'। मार्क्स कहते थे - अंग्रेज़ों की भारत पर विजय 'सभ्यता पर असभ्यता की विजय' है। इन बातों पर गहराई से विचार करने के लिए सामंतवाद क्या है? भारतीय सामंतवाद की विशेषताएँ क्या हैं? पूँजीवाद क्या है?व्यापारिक पूँजीवाद कैसे आता है? व्यापारिक पूँजीवाद की विशेषताएँ क्या हैं? औद्योगिक पूँजीवाद कैसे आता है? औद्योगिक पूँजीवाद तथा महाजनी पूँजीवाद में क्या फर्क है? महाजनी पूँजीवाद के लिए अमरीका, जापान, जर्मनी, इंगलैंड, फ्रांस के पूँजीवाद को समझना आवश्यक है। भारत में विदेशी पूँजी आती है तो विदेशी संस्कृति भी आती है - यह सीधा गणित समझना चाहिए। इसी बात को समझने के लिए डॉ. शर्मा ने किताब लिखी - 'भारतीय इतिहास और ऐतिहासिक भौतिकवाद'। डॉ.शर्मा की मार्क्सवाद से संबंधित पुस्तकें एक-सूत्र में जुड़ी हुई हैं और वह सूत्र है - भारतीय इतिहास और समाज व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में मार्क्सवाद की व्याख्या। वे कहते हैं कि 'इजारेदार पूँजीवाद की शक्ति का स्रोत है मुनाफाखोरी। संसार के कच्चे माल के स्रोतों पर वह अधिकार करता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और निगम अपने माल की बिक्री के लिए नव-साम्राज्यवाद स्थापित करते हैं।'

सफल या असफल क्रांति कैसी भी हो - असर पड़ता है। फ्रांसीसी राज्य-क्रांति का असर अंग्रेज़ी-साहित्य पर बहुत गहरा पड़ा। इसी तरह, 1857 की स्वाधीनता-भावना से भरी मुक्ति-क्रांति का असर हिंदी साहित्य और भारतीय साहित्य पर अनेक रूपों में पड़ा। 'आस्था और सौंदर्य' पुस्तक के नवीन संस्करण में डॉ. शर्मा ने एक लंबा लेख लिखा - 'फ्रांसीसी राज्य-क्रांति और मानव-संस्कृति के विकास की समस्या'।

डॉ. शर्मा ने मार्क्सवाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने के लिए 'पश्चिमी एशिया और ऋग्वेद', 'भारतीय नवजागरण और यूरोप' तथा 'इतिहास दर्शन' जैसी पुस्तकें लिखीं हैं। मार्क्स की दार्शनिक पृष्ठभूमि में यूनानी दर्शन, फ्रांसीसी-दर्शन और हीगल का दर्शन है। मार्क्स का पूरा समाज-संबंधी चिंतन इन दर्शनों से प्रभावित हुआ। भारत की अपनी दार्शनिक परंपरा है - मुख्यतः यथार्थवादी दार्शनिक धारा। यहाँ भी द्वंद्ववाद का विकास हुआ। भारतीय दार्शनिक परंपरा ने भारतीय रचनाकारों को भवभूति, कालिदास, तुलसी, जायसी, जयशंकर प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा, मुक्तिबोध, अज्ञेय को यथार्थवाद की एक नई पहचान दी। इस पहचान को पहली बार डॉ.शर्मा ने मार्क्सवादी दृष्टिकोण से हिंदी आलोचना में प्रस्तुत किया।

Scanned by CamScanner

डॉ.रामविलास शर्मा के आलोचक का ध्यान कम्युनिस्ट पार्टी और प्रगतिशील लेखक संघ में काम करते हुए भाषा संबंधी समस्याओं पर गया। इन समस्याओं से प्रेरित होकर उन्होंने पुस्तक लिखी - 'भाषा और समाज'। संकेत-संप्रेषण में मानव सभी जीवों में आगे है, उसके संकेत-संप्रेषण का प्रधान माध्यम है - ध्वनियों द्वारा संकेत। पशु-पक्षी भी ध्वनियों का उपयोग करते हैं लेकिन इस क्षेत्र में मनुष्य बहुत आगे बढ़ा हुआ है। मानव के पास न केवल विकसित मस्तिष्क है, बल्कि विकसित स्वर-यंत्र भी है जिससे वह अन्य प्राणियों की तुलना में अधिक ध्वनियाँ निकालने की क्षमता रखता है। अपनी बुनियादी ध्वनियों को वह शब्द का रूप दे देता है। इसका मतलब है कि भाषाओं का जन्म प्राकृतिक ध्वनियों के अनुकरण से नहीं हुआ। उसकी बुनियाद में ध्वनियों में भेद करने की शक्ति काम करती है। इस शक्ति-विकास में मानव को लाखों वर्ष लगे हैं - मानव समूह ने क्रमशः समाज का रूप लिया और सामाजिक गठन बराबर बदलते हैं। नतीजा होता है - प्रत्येक समाज का अपना गठन, अपनी विशेषताएँ। भाषा एक छोर पर रूढ़ि-युक्त तथा दूसरे छोर पर रूढ़ि-मुक्त परिवर्तनशील स्वभाव रखती है। उसमें भी ध्वनि-प्रवृत्ति भाषा का टिकाऊ पक्ष होता है। डॉ.शर्मा ने इसीलिए पुस्तक में एक अध्याय दिया - भाषा की ध्वनि-प्रकृति। शब्दों का संबंध जब वस्तुओं और परिस्थितियों के साथ निश्चित हो जाता है तब शब्दों से वाक्य बनते हैं। यह भाषा की 'भाव प्रकृति' है।

ऐतिहासिक भाषाविज्ञान में नस्ल-सिद्धांत का बार-बार जिक्र किया जाता है। जबकि नस्लों के आधार पर भाषा का गठन नहीं होता। कबीले स्त्रियों को उड़ाकर ले जाते हैं - नस्ल की शुद्धता खत्म हो जाती है। अतः नस्ल टिकाऊ नहीं है, भाषा की ध्वनि-प्रकृति टिकाऊ होती है। डॉ.शर्मा 'आदि इंडो यूरोपियन' भाषा-परिवारों के विस्तृत अध्ययन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि 'भाषा परिवारों के निर्माण का कारण सामाजिक विकास है, आदि भाषा का अस्तित्व नहीं।' भारत तथा भारत से बाहर यह माना जाता रहा कि आर्य बाहर से आए थे। वे 'इंडो-ईरानियन' शाखा से जुड़े थे। वैदिक भाषा से लौकिक भाषा का विकास, फिर लौकिक संस्कृत से प्राकृत और प्राकृत से अपभ्रंश, अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाएँ। इस तरह का एक ग्राफ बनाया जाता है, इस ग्राफ को डॉ. शर्मा अवैज्ञानिक

Scanned by CamScanner

मानते हैं और किशोरीदास वाजपेयी के 'हिंदी शब्दानुशासन' की प्रशंसा करते हैं। प्रगतिशील लेखक संघ में काम करते हुए डॉ.शर्मा ने हिंदी-प्रदेश में हिंदी के अलावा बहुत-सी जनपदीय भाषाओं के व्यवहार पर ध्यान केंद्रित किया। इससे ही किसान-संवेदना तथा किसान-आंदोलन (अवध के बाबा रामचन्द्र के किसान आंदोलन) को समझने की कोशिश की। किसान आंदोलन में प्रचार की भाषा में कविता-नाटक लिखे जाते हैं, गद्य बहुत कम लिखा जाता है। ध्यान देने की बात है कि जनपदीय भाषाएँ हिंदी से स्वतंत्र जातियों की भाषाएँ नहीं हैं। ब्रजभाषा तथा अवधी अपने क्षेत्र से बाहर भी फैलती रहीं तथा जनपदीय एकता कायम करती रहीं। इसी हिंदी प्रदेश में हिंदू-मुसलमान रहे। किंतु यह कहना गलत है कि हिंदी हिंदुओं की भाषा और उर्दू मुसलमानों की। मीर, गालिब चाहे जितने फारसी के शब्दों का इस्तेमाल कविता के सृजन में करें, उनके क्रियापद-सर्वनाम सब हिंदी से आते हैं। इससे सिद्ध होता है कि उर्दू हिंदी की ही एक शैली है। अवध के गाँव का किसान चाहे हिंदू हो या मुसलमान, अवधी बोलता है, फिर बोलचाल में हिंदी-उर्दू का भेद नहीं करता। डॉ.शर्मा का विचार है कि बहुत-सी भाषा संबंधी समस्याएँ ऐतिहासिक-सामाजिक भाषाविज्ञान से हल की जा सकती हैं। उन्होंने मार्क्सवाद को ऐतिहासिक-भाषाविज्ञान पर लागू किया। मार्क्सवाद के अनुसार, पुराने सामंती समाज का रूप पुराने कबीलों ने विकसित किया था। इसलिए गण-समाजों की भाषा में विभिन्नता होगी ही। फिर मार्क्सवाद के अनुसार सामाजिक विकास में केंद्रों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। जैसे पूँजीवाद के विकास में इंगलैंड की भूमिका, संस्कृतियों-भाषाओं के विकास में भारत के केंद्रों की भूमिका। इसलिए अपभ्रंश से आधुनिक भाषाओं के विकास का सिद्धांत गलत सिद्ध होता है। भाषाई-सम्पत्ति के हिसाब से भारत समृद्ध देश है, जनता का पूरा सामाजिक विकास इससे जाना जा सकता है।

Scanned by CamScanner